eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

लैंगिक हिंसा और मानवीय गरिमा

प्रो0 (डॉ0) कांती शर्मा[1]
[1]प्राचार्य, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरसागंज, फिरोजाबाद उ0प्र0

Received: 21 November 2023 Accepted and Reviewed: 25 November 2023, Published : 01 Dec 2023

Abstract

प्रस्तुत शोधपत्र में लैंगिक हिंसा और एक मानव की गरिमा का स्वरूप स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। लिंग आधारित हिंसा या लैंगिक हिंसा से तात्पर्य सीधे तौर परउस हिंसा से है जिसके कारणों के मूल में किसी भी व्यक्ति की लैंगिक पहचान होती है। इसे साहित्यिक भाषा में समझने के लिए यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति पर उसकी लैंगिक पहचान मसलन उसके महिला या ट्रांसजेंडर होने के कारण कोई हिंसा की जाती है तो उसे लैंगिक हिंसा कहते है। और इसी परिप्रेक्ष्य में मानवीय गरिमा को देखे तो मानव गरिमा आत्म–सम्मान की एक भावना है। इसलिए गरिमा अपने आप पर गर्व की भावना है। जो एक इंसान के पास है। यह सचेत भाव व्यक्ति को महसूस कराता है कि वे अन्य मनुष्यों से आदर और सम्मान पाने की पात्रता रखते हैं।और लैंगिक हिंसा व मानवीय गरिमा और स्वतंत्रता के बीच संबंध देखे तो मानवीय गरिमा दुनिया में स्वतंत्रता. समानता और शांति सहित सभी अधिकारों की नींव है,और इसे सामाजिक विनियमन के अधिकारों और कर्तव्यों का भी मार्गदर्शन करते हुए पाया गया है। – मेरे इस शोधपत्र विषय को चुनने का मुख्य कारण यही है कि लैंगिक हिंसा का अर्थ, कारण सिद्धांत व रोकथाम के विषय में वर्तमान के लोगों को बताकर उन्हें इस हिंसा के प्रति सतर्क करना और साथ ही साथ अपनी मानवीय गरिमा के बारे मे जानकर स्वयं की व दूसरों की गरिमा का आदर कर सकें।

बीज शब्द– गरिमा, मानवीय, लैंगिक

Introduction

लैंगिक हिंसा किसी व्यक्ति के विरुद्ध उसके लिंग कारण निर्देशित हिंसा है। महिला और पुरुष दोनों लिंग आधारित हिंसा का अनुभव करते है लेकिन पीड़ितों में अधिकांश महिलाएँ और लड़कियाँ है। लिंग आधारित हिंसा एक ऐसी हिंसा या घटना है जो लैंगिक असमानता से गहराई से जुड़ी हुई है और सभी समाजों में सबसे प्रमुख मानव अधिकारों के उल्लंघनों में से एक है। यह माँ के गर्भ से मृत्यु तक महिलाओं के पूरे जीवन चक्र में प्रकट होता है। लिंग आधारित हिंसा की कोई सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि नहीं होती तथा यह सभी सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाओं और लड़कियों को प्रभावित करती है।

लैंगिक हिंसा के कारण –

(1) सामाजिक /राजनीतिक / सांस्कृतिक कारण

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

• भेदभावपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कानून, मानदंड तथा व्यवहार जो महिलाओं और लड़कियों को हाशिये पर रखते हैं। और उनके अधिकारों को मान्यता प्रदान करने में विफल होते है।

• महिलाओं के खिलाफ हिंसा को सही ठहराने के लिए अक्सर लिंग संबंधी रूढ़ियों का इस्तेमाल किया जाता है। सांस्कृतिक मानदंड अक्सर यह तय करते हैं कि पुरुष आकर्मक. नियंत्रित करने वाले और प्रभावी होते है जबकि महिलाएं विनम्र, अधीन और परदाताओं के रूप में पुरुषों पर निर्भर रहती हैं। ये मानदंड एक प्रकार के दुरुपयोग की संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं।

• पारिवारिक, सामाजिक और साम्प्रदायिक संरचनाओं का पतन और परिवार के भीतर महिलाओं की बाधित भूमिका अक्सर महिलाओं तथा लड़कियों को जोखिम में डालती है और इसके निवारण के लिए मुकाबला करने वाले रास्तों एवं तरिको के जोखिम एवं सीमा को उजागर करती है।

(2) न्यायिक कारण–

• न्याय संस्थानों तक पहुँच का अभाव हिंसा और दुर्व्यवहार हेतु दंड के भय की समाप्ति की संस्कृति उत्पन्न करती है।

• पर्याप्त और वहनीय कानूनी सलाह और प्रतिनिधित्व का अभाव।

• पीड़ित /उत्तरजीवी और गवाह सुरक्षा तंत्र का पर्याप्त अभाव

• अपर्याप्त न्यायिक ढांचा जिसमें राष्ट्रीय, पारंपरिक, प्रथागत और धार्मिक कानून शामिल हैं जो महिलाओं और लड़कियों के साथ भेदभाव करते है।

3) व्यक्तिगत कारण

• धमकी या कलंक का भय, अलगाव, सामाजिक बहिष्कार तथा अपराधी व्यक्ति के हाथों दोबारा हिंसा समुदाय या पराधिकरण . गिरफ्तारी सहित नजरबंद, दुर्व्यवहार और सजा इत्यादि का भय रहता है।

• मानवाधिकारों के बारे में जानकारी की कमी और उपचा– र कैसे और कहाँ करना है आदि की जानकारी का अभाव ।

इसके अलावा निम्न तरह से भी महिलाओं / लड़कियों की उन्नति में लैंगिक हिंसा सबसे बड़ी बाधाओं में एक है

• लैंगिक हिंसा महिलाओं के स्वास्थ्य के सभी पहलुओं शारीरिक, यौन और प्रजजन.मानसिक एवं व्यवहार संबंधी स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करता है। इस प्रकार उन्हें यह हिंसा अपनी पूर्ण क्षमता का एहसास होने से रोकता है।

• यौन उत्पीड़न लड़कियों के शैक्षिक अवसरों और उपलब्धियों को सीमित करता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

- समाज, सरकार और व्यक्तियों के सामूहिक प्रयासों से लिंग आधारित हिंसा को समाप्त किया जा सकता है।

लैंगिक हिंसा को रोकने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाऐं जा सकते हैं –

1. लिंग आधारित हिंसा को पहचानने और सहायता करने के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं का प्रशिक्षण सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है।

2. मीडिया लिंग आधारित हिंसा को सामने लाने, समाधान के विज्ञापन, नीति–निर्माताओं को सूचित करने और जनता को कानूनी अधिकारों के बारे में शिक्षित करने तथा लिंग आधारित हिंसा को पहचानने में मुख्य भूमिका निभा सकती है।

3. शिक्षा लिंग आधारित हिंसा को शुरू होने से पहले ही रोकने में महत्वपूर्ण उपकरण है।

4. नियमित पाठ्यक्रम यौन संबंधी शिक्षा , परामर्श कार्यक्रम तथा विद्यालयी स्वास्थ्य सेवाएं सभी यह संदेश दे सकते है कि लैंगिक हिंसा गलत है और उसे रोका जा सकता है।

5. कई अध्ययनों से पता चला है कि लिंग आधारित हिंसा को रोकने, पहचानने और संबोधित करने में भी समुदायों का शामिल करना इसे समाप्त करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

मानवीय गरिमा

मानवीय गरिमा का मतलब है दूसरों का सम्मान करना और उनके साथ ऐसा व्यवहार करना जो उनके गुरुत्व, महत्व और मान को बढ़ाए। यदि आप चाहें तो जैसा कि सेवार्थियों के पास उनकी स्वयं की नजर में आत्म सम्मान और दूसरों की आँखो में वजन (सामाजिक मान) होता है वैसा बढ़ा सकते है। यह प्रत्येक व्यक्ति की कार्यात्मक क्षमता, जाति, लिंग, नस्ल संस्कृति या अन्य विशेषताएं है जो एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करती है।

व्याकरणिक अभिव्यक्ति में मानवीय गरिमा में मानव संज्ञा ईय प्रत्यय और गरिमा विशेषण है। यहां विशेषण संज्ञा की विशेषता बता रहा है। मानव शब्द लैटिन भाषा के हयूमस मे लिया गया है जिसका अर्थ पृथ्वी से संबंधित होता है अतः हयूमन का मतलब जो पृथ्वी से जुड़ा या सांसारिक है या पृथ्वी पर रहने वाला एक प्राणी है साहित्यिक भाषा में इसका अर्थ यह है कि हम है या तर्कसंगत प्राणियों की प्रजातियों के लिए जो उचित है विशेष रूप से उनकी दयालुता (मानवता) और मोहशीलता (सभी) मानव को संदर्भित करता है ।

गरिमा शब्द लैटिन के श्डीकसश संज्ञा से आता है, जिसका अर्थ आभूषण, सम्मान महिमा और भेद होता है। साहित्यिक भाषा मे गरिमा का मतलब अपने सम्मान के हक में खड़े होना उसका स्टेटस और यह उसको संदर्भित करता है जो एक मनुष्य (विशेष व्यक्तिगत रूप से) में इस तरह के सम्मान को शामिल करता है /शामिल करना चाहिए। जब मानव और गरिमा शब्द को संयुक्त रूप से प्रयोग किया जाता है तो उनकी अभिव्यक्ति मानवीय गरिमा के रूप में होती है जिसका अर्थ है मनुष्य की स्थिति जो उसको सम्मान पाने का अधिकार देती है एक ऐसी स्थिति है जो पहले से है और मान्यता मिली हुई है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

मानव गरिमा का साहित्यिक अर्थ देखे तो मानव गरिमा प्रकट होने या व्यवहार करने का एक तरीका है जो गंभीरता और आत्म–नियंत्रण का सुझाव देता है। ष्मानवीय गरिमाष मानवीय मूल्यों की स्थापना का मूल आधार है। इसमें कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य को मानव समुदाय के स्वाभावित रूप से मूल्यवान सदस्य और एकीकृत शारीरिक और आध्यात्मिक प्रकृति के साथ जीवन की एक अनूठी अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए । सभी धार्मिक ग्रंथों में मानवीय गरिमा के रखरखाव का उल्लेख किया गया है। क्योंकि यह मानव पहचान का आधार बनता है।

एम. मुंशी के अनुसार– व्यक्ति की गरिमा का अर्थ यह है कि संविधान न केवल वास्तविक रूप से भलाई तथा लोकतांत्रिक तंत्र की मौजूदगी सुरक्षित करता है बल्कि यह भी मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व पवित्र है । मानव गरिमा वैश्विक मानवाधिकार व्यवस्था की मूलभूत अवधारणा– श्अल्टीमेट वैल्यू है जो मानवाधिकारों को समानता प्रदान करती है (हैसन 2003) सन् 1993 में आयोजित विश्व मानवाधिकार सम्मेलन का वियना घोषणा पत्र भी इसकी पुष्टि करता हैरू सभी मानवाधिकार मानवीय व्यक्ति में गरिमा और मूल्य के रूप में निहित है। गरिमा एक अवधारणा है जिसका प्रयोग नैतिक, नैतिकता, कानूनी और राजनीतिक चर्चाओं में यह दर्शाने के लिए किया जाता है। कि एक मनुष्य को मूल्यांकित होने और नैतिक व्यवहार प्राप्त करने का सहज अधिकार है। यह ज्ञान युग की अंतर्निहित और अतुलनीय अधिकारों की अवधारणाओं का विस्तार है और इसके साथ ही गरिमा का मानवता के महत्व से जुड़ा विशिष्ट अर्थ भी है।

प्यार रिश्तेदारी और मित्रता मानवीय रिश्तें है। जिनमें व्यक्ति गहराई का पता लगाता है और महसूस करता है कि ये उच्चतम् मूल्य व्यक्तिगत पहचान का एकीकरण है। जो एक ही साथ अपने और दूसरों के अन्दर उत्त्पन्न होता है। मानव गरिमा का विचार, मान्यता के इस अनुभव को स्वीकार करते हैं। मानव गरिमा का सिद्धांत यह आश्वासन होता है कि सभी मनुष्यों के संबंध में इसे अनुभव करना संभव है। जब सिद्धांत तैयार किये जाते है तो ध्यान रखा जाता है कि ये हर इंसान के मूलभूत मूल्यों की पुष्टि करें। यह स्पष्ट रूप से सबके हित में है उनमें मानव गरिमा होने के कारण उनका सम्मान किया जाये अर्थात् अतुलनीय मानवता का सर्वोच्च गुण होने के कारण मनुष्यों को सम्मानित करना चाहिए। मानवीय गरिमा का महत्वः– व्यक्ति की गरिमा महान माननीय उत्कृष्ट या योग्य होने की गुणवत्ता है। इन गुणों के कारण ही मनुष्य को सर्वोच्च प्राणी माना जाता है। मानवीय गरिमा, मानव अधिकारों के निर्माण और निष्पादन के लिए वैचारिक आधार है और इसे न तो समाज द्वारा दिया जा सकता है और ना ही वैधानिक रूप से समाज द्वारा माना जा सकता है। मानवीय गरिमा का एक अनिवार्य निहितार्थ यह है कि प्रत्येक इंसान को जीवन के अधिकार एकीकृत शारीरिक विशेषताओं और आध्यात्मिक प्रकृति की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के साथ समुदाय के एक अमूल्य सदस्य के रूप में माना जाना चाहिए। मानवीय गरिमा सम्मान की एक भावना है। इसलिए गरिमा अपने आप पर गर्व की भावना है जो इंसान के पास है।

मानवीय गरिमा के महत्व का प्रदर्शन कुछ इस प्रकार भी होता है–

(1) दूसरों के साथ बातचीत में बुनियादी शिष्टाचार का प्रदर्शन करना ।

(2) कक्षा में बोलने के लिए प्रशिक्षक की जिसे अनुमति मिली है उसकी बातों पर ध्यान देना ।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

3. कक्षाओं में सीखने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने वाले व्यवहारों से बचना।

जैसे– बीच–बीच मे बातें करना, मोबाइल फोन का उपयोग करना, जवाब देने में बाधा देना, कक्षा से व्यक्तिगत ब्रेक लेना उत्यादि ।

4. हमेशा दूसरों के लिए सम्मान दिखाने वाले तरीकों से बोलना और व्यवहार करना ।

मानवीय गरिमा के सिद्धान्त– केनेडियन एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स (सी. ए. एस डब्ल्यू) के नैतिक संहिता में मानवीय गरिमा के कुछ सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। जो इस प्रकार है–

(1) समाज कार्यकर्ता प्रत्येक व्यक्ति के अद्वितिय मूल्य और अंतर्निहित गरिमा का सम्मान करते हैं और मानवाधिकारों को कायम रखते है।

(2)समाज कार्यकर्ता प्रत्येक व्यक्ति के आत्म निर्णय के अधिकार को दूसरों के अधिकारों के साथ उसकी क्षमता के अनुरूप बनाए रखते है ।

(3) समाज कार्यकर्ता स्वैच्छिक, सूचित सहमति के आधार पर विकल्प बनाने के लिए सेवार्थी के अधिकार का सम्मान करते हैं।

(4) समाज कार्यकर्ता व्यक्तियों के आत्म निर्णय की सीमाएँ निर्धारित करने के लिए समाज के अधिकार का समर्थन करते है । ऐसी सीमाएँ लोगों को आत्महानि से और दूसरों को नुकसान पहुंचाने से रक्षा करती है।

(5) समाज हिंसा और हिंसा के खतरे से मुक्त होने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार का समर्थन करते है।

मानवीय गरिमा का उल्लंधन कई तरीके से किया जाता है–

1. अपमान– (उदाहरण के लिए रू समय पर स्कूल शुल्क का भुगतान न करने पर कक्षा में बच्चे को अपमानित करना)

2. यंत्रवत वस्तु के रूप में व्यवहार करना (उदाहरणरू– नौकरों को अपनी सेवा या खुशी के साधन के तौर पर व्यवहार करना)

3. गिरावटरू (उदाहरणरू घर में या अस्पतालों में मानसिक रोगियों को चेन से बांधकर पशु की तरह रखना)

4. अमानवीकरण– (उदाहरण रू दुर्गम देखभाल केन्द्र में वृद्धों या निराधार व्यक्तियों को भोजन और कपड़े प्रदान नहीं करना)

मानवीय गरिमा का उल्लघंन करने वाली प्रथाओं में यातना, बलात्कार. सामाजिक बहिष्कार, श्रम और गुलामी शामिल है। सकारात्मक शब्दों में व्यक्ति के महत्व की गरिमा के लिए अपने विश्वासों , दृ ष्टिकोणों, विचारों और भावनाओं की पहचान होनी चाहिए। व्यक्ति को बदलने के लिए शारीरिक या मनोवैज्ञानिक दबाव का उपयोग वैसा ही है जैसे शारीरिक या मानसिक यातना के रूप में किसी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

व्यक्ति की गरिमा को अपमानित किया जाना (स्काचटर 1983) अस्पृश्यता का अभ्यास, धर्म, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव इत्यादि ऐसे कार्य हैं जो मनुष्य की गरिमा के खिलाफ है।

मानवीय गरिमा की अभिव्यक्ति– समाज कार्यकर्ता सहित अन्य लोग कमजोर और भ्रमित रहते हैं। अक्सर यह मान लिया जाता है कि समाज कार्य पेशेवर यह जानते है कि सेवार्थियों की गरिमा को कैसे महत्व दिया जाता है। इसके लिए नैतिक क्षमता विशेष रूप से प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा के अभ्यास में सांस्कृतिक संवेदनशीलता विवेक, साहस, सहानुभूति और करुणा जैसी क्षमता की अधिक आवश्यकता होती है। भलाई के लिए एक प्रतिबद्धता के साथ स्वयं को और दूसरों को गंभीरता से जांचना जरूरी है। इसके लिए मानव अधिकारों और मानवीय प्रकृति के विचारों के संबंध में गरिमा का सैद्धांतिक संदर्भ की जरूरत है। हम इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए पेशेवरों द्वारा सेवार्थियों के प्रति गरिमा और सम्मान को व्यक्त करने के संभावित तरीके की जांच कर सकते है ।

निष्कर्ष–

देखा जाये तो लैंगिक हिंसा और मानवीय गरिमा एक दूसरे के पूरक है क्योंकि इन दोनों में पिसता एक इंसान ही अब वो लिंग आधारित हिंसा से प्रताड़ित हो या फिर स्वयं गरिमा को लेकर प्रताड़ित हो । लेकिन दोनों के बारे में लोगों को सही शिक्षा उपलब्ध कराकर या उनके अधिकारों के बारे में लोगों को जागृत करके इस प्रकार की हिंसाओं से बचना सम्भव है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. भारतीय समाज – विकास दिव्यकीर्ति (2021)
2. यूनिवर्सल हयूमन राइट्स इन थ्योरी एंड प्रैक्टिस – जैक डोनेली(1989)
3. समाज कार्य के मूल के रूप में गरिमा और सम्मान – रीना रशल
4. लैंगिक विभेद का अर्थ – अजय
5. लैंगिक असमानता और भारतीय समाज– रूपाली ए. इंगोले
6. जाति–धर्म और लैंगिक मसले – NCERT की पुस्तक कक्षा 10
7. महिलाओं के खिलाफ हिंसा – गार्सिया मोरेनो (2005)
8. लिंग आधारित हिंसा, अवधारणाएँ, तरीके और निष्कर्ष